MINISTRY OF FINANCE (SHRI RAMESHWAR THAKUR): (a) to (c) The Indo-Pak border continues to be sensitive to smuggling. However, since smuggling is a clandestine activity it is not possible to say whether there has been a spurt in the recent past. The value of the goods seized during the last 3 years in the Indo-Pak sector of the land border are given below:—

Year	Value
	(Rs. in crores)
1989	39.97
1990	24.70
1991	31.41
1992 (January to September)	18.26

The anti-smuggling drive has been intensified and close coordination is being maintained among all the agencies concerned in the detection and prevention of smuggling.

Collection of Income-tax from Uttar Pradesh

168. SHRI RAM RATAN RAM: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) what is the total amount of income tax collected from Uttar Pradesh during the last three years, year-wise;

(b) what is the total number and value of cases of default; and

(c) what steps are being taken to recover such amount?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI RAMESHWAR THAKUR): (a) The collection of income-tax (including corporation tax) from Uttar Pradesh during the last three financial years is given below:

(Rs. in Crores)

1989-90	796
1990-91	465
1991-92	712

(b) The number of cases of income-tax demand and the total amount of demand, outstanding at the end of each of the last three financial years are given below:

(Rs. in Crores)

	No. of outstanding cases of demands	Total demand outstanding
1989-90	3,25,100	458
1990-91	3,52,700	484
1991-92 (Provisional)	3,67,320	333

(c) Appropriate administrative and legal measures are continuously taken to recover the outstanding demand. A very high priority is being given to this work. Targets have been fixed in the Central Action Plan of the Income tax Department for recovery of arrear and current demand. In cases involving higher demands, dossiers are maintained and action in these cases is closely monitored.

विदेशी कर्ज की राशि में वृद्धि

169. डा० जिनेन्द्र कुमार जैन:
श्री राम जेठमलानी:

क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि देश पर विदेशी कर्ज की राशि में गत कई वर्षों से निरंतर वृद्धि होती जा रही है;

(ख) यदि हां, तो 31 मार्च 1990, 1991 और 1992 की स्थिति के अनुसार देश पर विदेशी कर्ज की राशि कितनी-कितनी रही;

(ग) चालू वित्तीय वर्ष की प्रथम छमाही के अन्त में, अर्थात् 30 सितम्बर, 1992 को विदेशी कर्ज की मात्रा कितनी थी;

(घ) क्या यह सच है कि देश पर विदेशी कर्ज की राशि में निरन्तर वृद्धि को देखते हुए सरकार विदेशी कर्ज की अन्तिम सीमा निर्धारित करने पर विचार करेगी;

(ङ) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं; और

(च) यदि हां, तो इसकी घोषणा न किये जाने के क्या कारण है?

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री रामेश्वर ठाकुर): (क) जी, हां।

(ख) मार्च, 1990, मार्च 1991 और मार्च 1992 के अन्त में उस तारीख को प्रचलित विनिमय दर पर क्रमशः 463760 लाख अमेरिकी डालर के बराबर 80345 करोड़ रुपये 511250 लाख अमेरिकी डालर के बराबर 100425 करोड़ रुपए और 536680 लाख अमेरिकी डालर के बराबर 166905 करोड़ रुपए देश पर बकाया विदेशी कर्ज था।

(ग) 30 सितम्बर, 1992 के अन्त की स्थिति के अनुसार उस तारीख को प्रचलित विनिमय दर पर देश पर बकाया कर्ज 571250 लाख अमेरिकी डालर के बराबर 171310 करोड़ रुपए था।

(घ) से (च) सरकार देश के विदेशी कर्ज उत्तरदायित्व के प्रति सचेत है और देश के कर्ज के स्तर और ऋण परिशोधन के सम्भावित भार पर लगातार निगरानी रखती है। विदेशी ऋण लेते समय इस बात पर सदा ध्यान दिया जाता है कि देश का ऋण भार और ऋण परिशोधन उत्तरदायित्व ऐसे ऋणों के परिशोधन के लिए अर्थव्यवस्था की क्षमता से अधिक न हो। सरकार ने अल्पावधिक स्थायीत्व के साथ दीर्घावधिक पुनः संरचना के उद्देश्य से पहले ही आर्थिक सुधारों का कार्यक्रम शुरू किया है। यह सुधार देश की आर्थिक स्थिति में सुधार करेंगे और हमारी विकास प्रक्रिया को सक्षम करेंगे जिसमें हमारी निर्यात क्षमता शामिल है ताकि ऋणों की वापसी अदायगी की हमारी क्षमता को बढ़ाया जा सके और यह सुनिश्चित किया जा सके कि ऋण परिशोधन भार ऐसे ऋणों के परिशोधन के लिए अर्थव्यवस्था की क्षमता से अधिक न हो।

भारत पर विदेशी कर्ज

170. **श्री राम जेठमलानी:** क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार का ध्यान 2 अक्तूबर, 1992 के "इकानोमिक टाइम्स" में "एक्सटर्नल डेब्ट मेय टच 31.100 बिलियन सून" शीर्षक से प्रकाशित समाचार की ओर दिलाया गया है;

(ख) क्या यह सच है कि यह विदेशी कर्ज सितम्बर, 1992 के अंत तक 75 से 80 बिलियन डालर तक हो जाने की संभावना है;

(ग) यदि नहीं, तो इस संबंध में तथ्य क्या हैं; और

(घ) इस विदेशी कर्ज पर भुगतान किए जाने वाले वार्षिक ब्याज की अनुमानित धनराशि कितनी है?

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री रामेश्वर ठाकुर): (क) जी, हां।

(ख) और (ग) सरकारी खाते, गैर-सरकारी खाते, विदेशी वाणिज्यिक उधारों और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के उधारों के संबंध में बकाया विदेशी ऋण की राशि सितम्बर, 1992 के अंत में 171310 करोड़ रुपए की होने का अनुमान है जो 5712.3 करोड़ अमेरिकी डालर के समकक्ष है।

(घ) बकाया विदेशी ऋण पर वर्ष 1992-93 में देय ब्याज की राशि 7148 करोड़ रुपए आंकी गई है।

Revamping of National Savings Scheme

171. SHRI RAJNI RANJAN SAHU: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) whether it is a fact that National Savings Scheme has been revamped; and

(b) If so, what are the details thereof?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI DALBIR SINGH): (a) Deposits in the National Savings Scheme, 1987 have been discontinued from 1.10.92. A new scheme, namely the National Savings Scheme, 1992 has been introduced from the same date.

(b) The salient features of the new scheme are as follows:

1. A separate account shall be opened in a Post office by every depositor each year.
2. An account can be opened by a single adult as well as by two adults jointly.
3. Interest at the rate of 11% p.a. shall be allowed on deposits under the scheme.
4. The interest credited in the account may be withdrawn at any time at the option of the depositor.